U.S.
DEPARTMENT
OF STATE

BUREAU OF
OVERSEAS BUILDINGS
OPERATIONS

संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास
नई दिल्ली, भारत

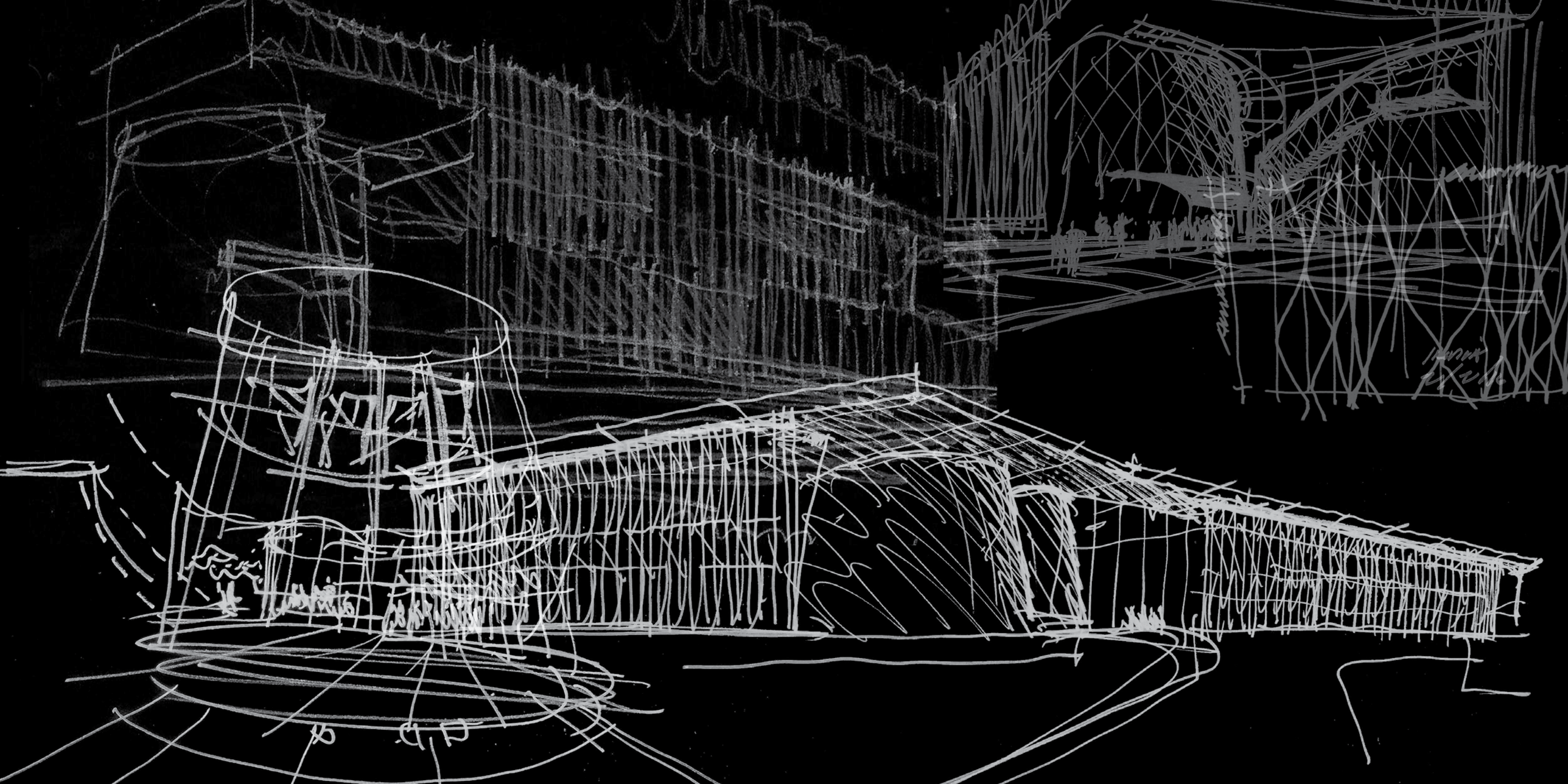

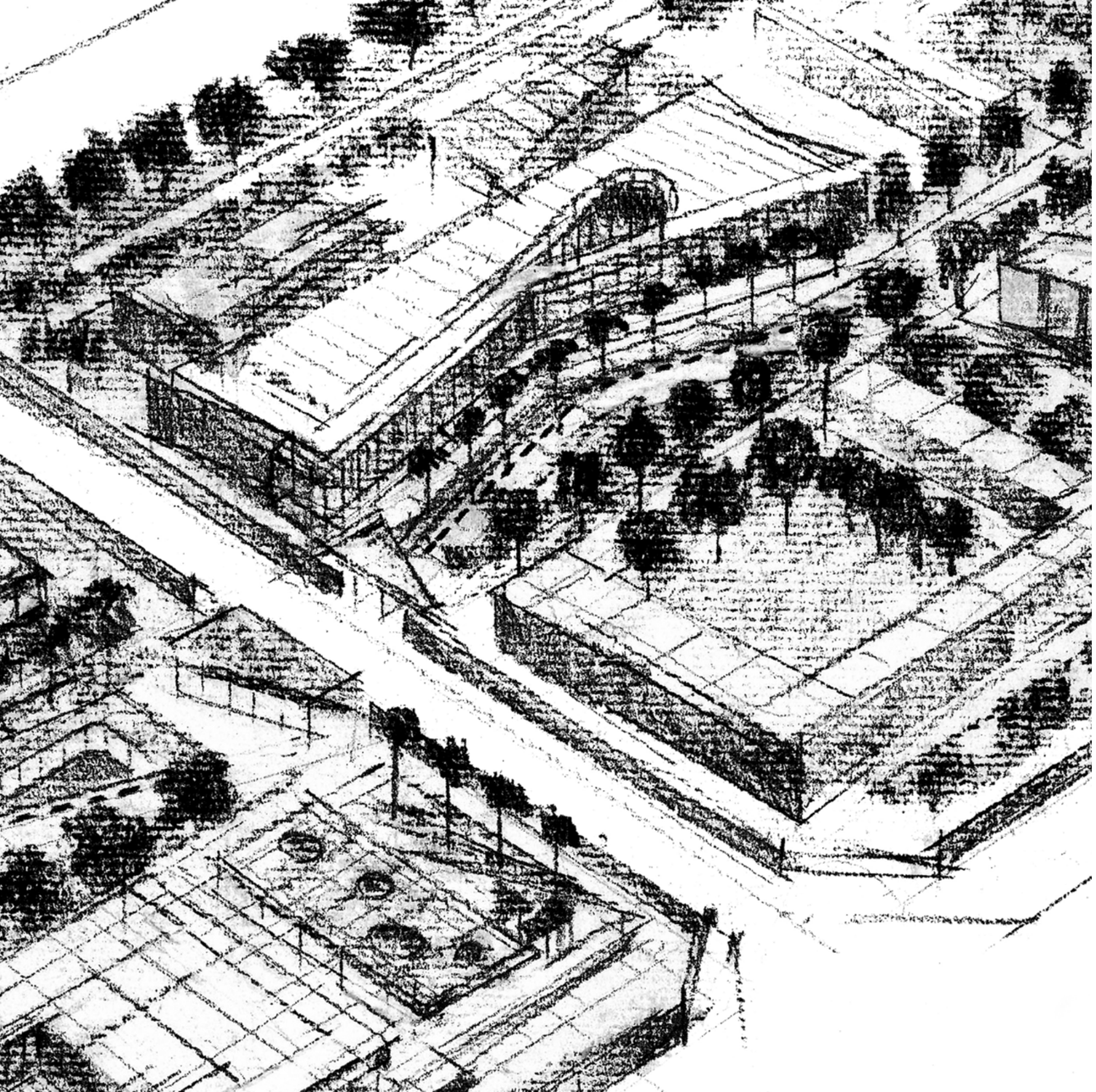

नई दिल्ली में राजनयिक विरासत का विकास

नई दिल्ली में संयुक्त राज्य अमेरिका का दूतावास विश्व के सबसे बड़े और अति सक्रिय राजनयिक मिशनों में एक हैं जो दुनिया के दो विशाल और प्राचीन लोकतंत्रों के संबंधों के महत्व को दर्शाता हैं। प्रतिदिन ये दूतावास कांसुलर में हज़ारों आगंतुकों की सहायता करता हैं जिससे यह भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच आदान-प्रदान का एक विशेष स्थान हैं। वर्तमान में दूतावास संयुक्त राज्य अमेरिका की तेरह फेडरल एजेंसियों का प्रतिनिधित्व करता हैं। साथ ही मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और हैदराबाद के वाणिज्यदूतावासों (कॉन्सूलेट्स) की गतिविधियों का भी समन्वय करता हैं।

दूतावास नई दिल्ली के प्रख्यात चाणक्यपूरी के राजनयिक एंकलेव में स्थित हैं, दूतावास का मूल परिसर २८ एकड़ में हैं जहाँ अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त इमारत व प्राकृतिक दृश्य हैं जिन्हें साठ वर्ष पूर्व एडवर्ड ड्यूरेल स्टोन द्वारा डिज़ाइन किया गया था। यह उस समय के आधुनिक डिज़ाइन सिद्धांतों और पारंपरिक भारतीय वास्तुकला का समन्वय करता हैं। अपने मूल रूप में चांसरी और रूसवेल्ट हाऊस अब संयुक्त राज्य अमेरिका के सेक्रेट्री ऑफ स्टेटस की ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण पंजीकृत सम्पतियों में से एक हैं।

२०१५ में संयुक्त राज्य अमेरिका के विदेश विभाग ने वाइस/मैनफ्रेडी को नई दिल्ली में दूतावास की नई इमारत डिज़ाइन करने के लिए एक मास्टर प्लान बनाने के लिए अधिकृत किया हैं। जो इस महत्वपूर्ण स्थान की विरासत को पहचानते हुए भारतीय और संयुक्त राज्य अमेरिका के राजनयिक भविष्य की नींव की स्थापना करें। नए दूतावास की डिज़ाइन नई दिल्ली में ऐतिहासिक और आधुनिक परम्पराओं को दर्शाती हैं। इसके मध्य में हरियाली के साथ कास्ट स्टोन स्क्रीन्स की सीरीज और बगीचे से बनीं हरित दीवारें हैं। यह लचीले डिज़ाइन का परिचय देते हुए परिसर को २१ वीं सदी में ले जाता हैं।

नई दिल्ली में संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास का इतिहास

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के दशकों में संयुक्त राज्य अमेरिका ने भारत के साथ अपने संबंधों को मज़बूत बनाने हेतु कार्य किया जिसमें राजनयिक उपस्थिति की वृद्धि हुई इसमें राष्ट्रपति आईजनहॉवर और कैंनेडी का भी भारत आगमन भी शामिल हैं। १९५० के दशक में भारतीय सरकार ने नई दिल्ली में चाणक्यपूरी के समीपवर्ती क्षेत्र में विदेशी दूतावासों के लिए एक नए राजनयिक एंकलेव की स्थापना की जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास को शांतिपथ पर २८ एकड़ का स्थान प्रदान किया गया। चीन, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस और स्विटज़रलैंड ने भी पड़ोसी क्षेत्र में अपने दूतावासों का निर्माण किया।

१९५४ में अमेरिकी वास्तुकार एडवर्ड डयूरैंल स्टोन को संयुक्य राज्य अमेरिका के नवीन दूतावास को डिज़ाइन करने के लिए अधिकृत किया गया था। आगरा स्थित ताज महल और वाशिंगटन डी.सी. की नागरिक वास्तुकला से प्रेरणा लेते हुए स्टोन ने इसे आयाताकार मंडप जैसा बनाया और उसे बारीक स्क्रीन का आवरण दिया, जो एक मंच पे उत्थापित हैं, पतले सोने के पानी चढ़े स्तम्भों पर बनी छत हैं। मंदिर की सी शांति और ताज महल के मुगल वास्तु शिल्प का प्रभाव दूतावास के मंडप और सामने कुण्ड में दिखती छवि में स्पष्ट दिखाई देता हैं।

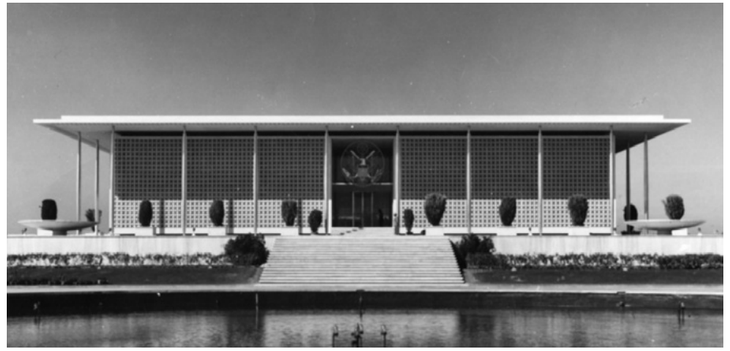

वर्तमान चांसरी वास्तुकार एडवर्ड डयूरैंल स्टोन द्वारा डिज़ाइन किया गया हैं जो १९५९ में खुला था।

संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास, नई दिल्ली, भारत

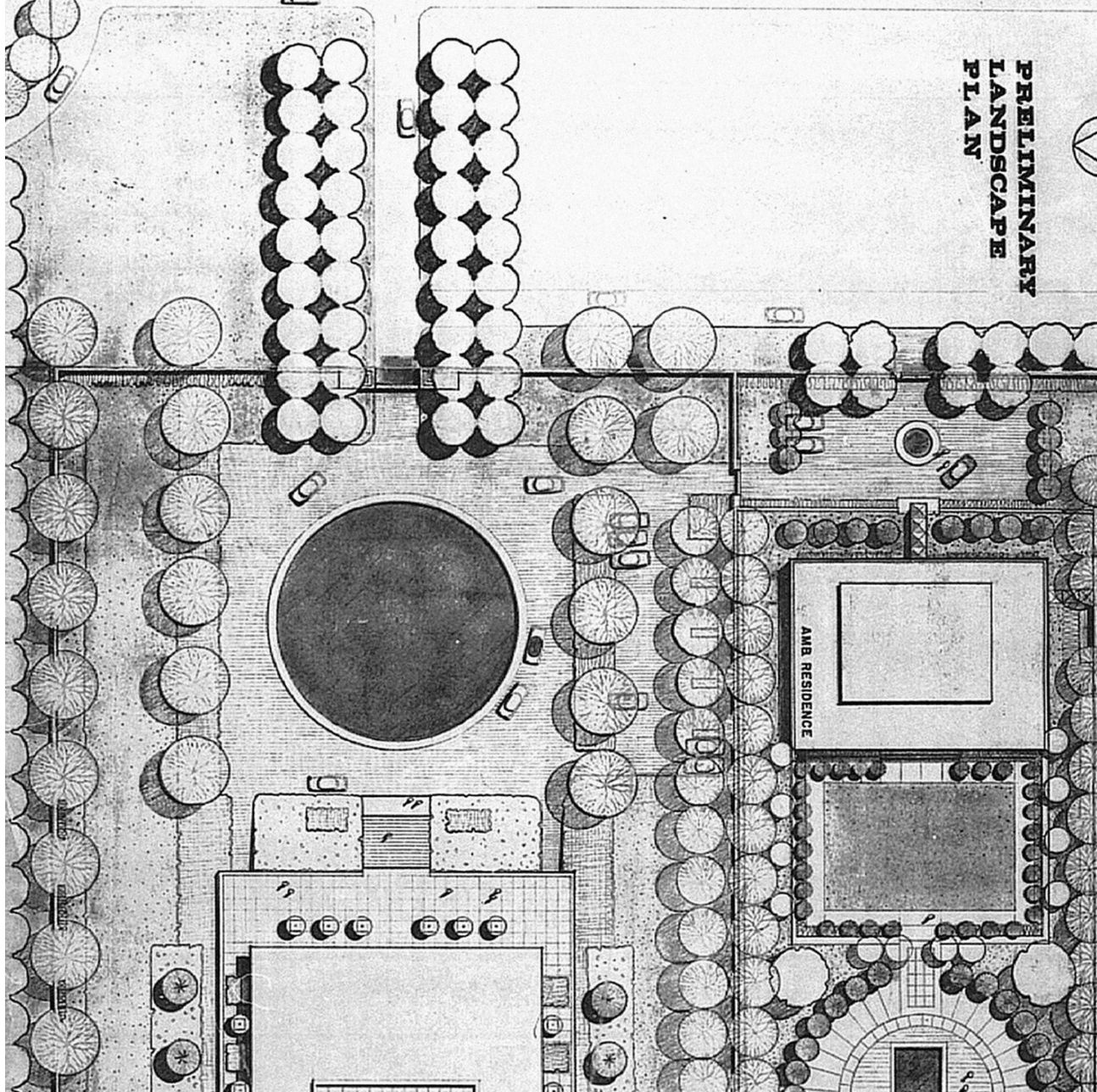

संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास, नई दिल्ली, भारत

दूतावास के निर्माण के लिए स्टोन ने प्रमुख भारतीय निर्माणकर्ता मोहन सिंह और उनके १५०० कारीगरों के साथ साझेदारी की। दूतावास का निर्माण अस्सी प्रतिशत भारत में बने उपकरणों से हुआ हैं। स्टोन के शब्दों में, "पूर्णतः हाथों से बना" हैं। । उद्घाटन के समय तत्कालीन अमेरिकी राजदूत एलस्वर्थ बंकर ने कहा, "डिज़ाइन के विषय में कुछ भी मानकीकृत नहीं था और 'स्वंय करो' निर्माता के लिए प्रतिदिन का नारा बन गया था।"[१] दूतावास की आइकोनिक स्क्रीन कंक्रीट और संगमरमर के मिश्रण से साइट पर ही निर्मित की गई थी। मंच का फर्श जिन छोटे पत्थरों से बना था वह कारीगरों द्वारा पवित्र गंगा नदी से एकत्रित किए गए थे।

स्टोन के भारत में पहले संयुक्त राज्य अमेरिकी दूतावास के डिज़ाइन को अमेरिकी जनता ने बहुत सराहा, जो कि अमेरिकी सरकार द्वारा विदेशों में उनके मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए एक नया माध्यम था। ५ जनवरी १९५९ को दिल्ली में संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास को धूमधाम से आगंतुकों और मीडिया के लिए खोला गया। प्रख्यात स्वतंत्र समाचार केंद्रों ने दूतावास की बहुत प्रशंसा की। १९५६ में जब मुख्य न्यायाधीश (चीफ जस्टिस) अर्ल वॉरेन ने नींव का पत्थर रखा था तो आशा की थी कि यह दूतावास शांति का मंदिर बनेगा। उनके यही शब्द संचार माध्यमों में गूंजते हुए नज़र आए।[२] जब प्रथम महिला जैकलिन कैनेडी १९६२ में चांसरी आईं तो दूतावास के आंतरिक जल उद्यान में कंकरीट पथ पर उनके सुंदर कदमों की शिष्ट और मनोहारी तस्वीरों ने दूतावास को प्रारंभ करने में मदद की और विदेश विभाग के विदेशी भवन कार्यक्रम को सफलता प्रदान की।

जैकलिन कैनेडी और राजदूत गैलब्रेथ आंतरिक जल उद्यान में,१९६२
बाईं ओर: राजदूत का निवास और अन्य कर्मचारियों का निवास दोनों पूर्ण हो रहे हैं। यह तस्वीर १९६२ के करीब ली गई हैं।

१ यूनाइटिड स्टेटस इनफोरमेशन सर्विस (यू एस आइ एस), राजदूत बंकर की उक्ति: नए संयुक्त राज्य अमेरिकी दूतावास का उद्-घाटन," ३ जनवरी १९५९

२ यूनाइटिड स्टेटस इनफोरमेशन सर्विस " नई दिल्ली संयुक्त राज्य अमेरिकी दूतावास," १९५९

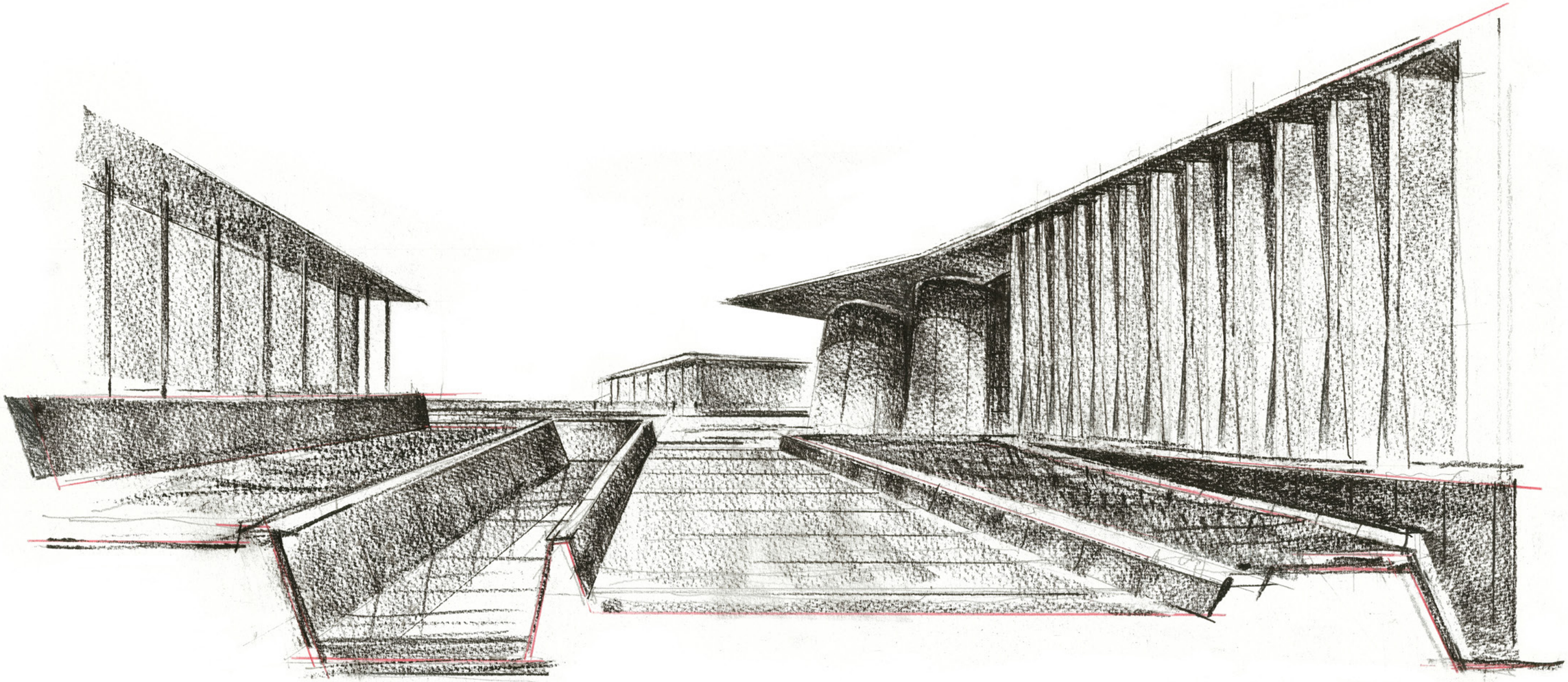

US EMBASSY • NEW DELHI INDIA • 12/2016

Marion Weiss Michael Maltzan

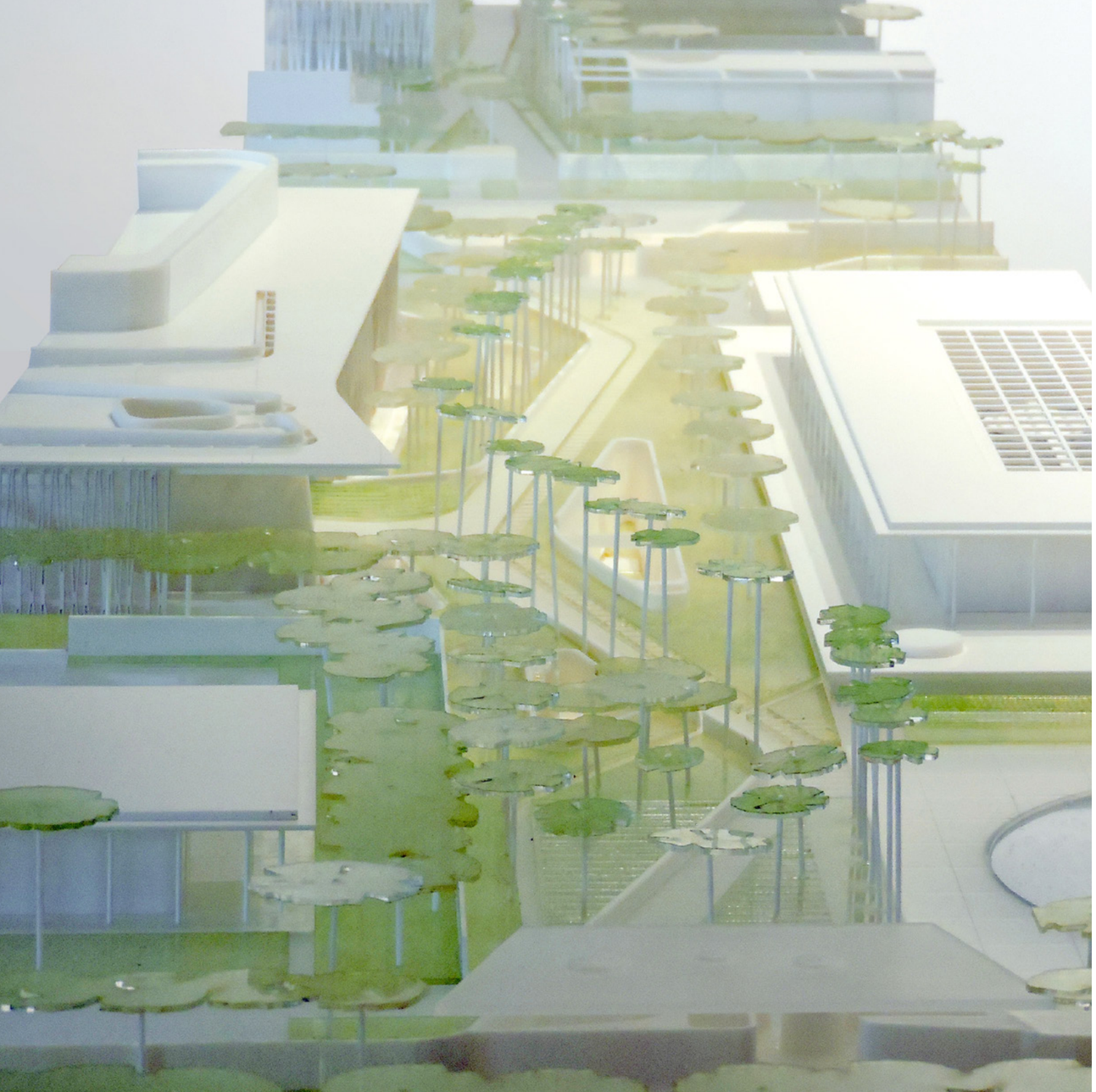

दूतावास के लिए नवीन दृष्टिकोण

नया डिज़ाइन २८ एकड़ के परिसर को इक्कीसवीं सदी में राजनयिक संबंधों के लिए एक नवीन मंच प्रदान करता है। यह पारंपरिक भारतीय वास्तुकला और लैंडस्केप पर शोध के साथ-साथ दूतावास की वर्तमान ज़रूरतों जैसे जगह, सुरक्षा और स्थिरता के अनुसार बना है। एडवर्ड ड्यूरेल स्टोन की दृष्टि में दूतावास की विशेषता थी, बागीचों के बीच बनीं मंदिर जैसी इमारत। इमारतों और परिसर के दो ब्लॉक के बीच संयोजन को मज़बूत करने के लिए वाइस/मैनफ्रेडी ने उद्यान की कल्पना की, जो कि नया सैंट्रल ग्रीन होगा। परिसर के केंद्र में एक विस्तृत लम्बा उद्यान जिसमें पंक्तिबद्ध शाही दिखने वाले ताड़ के पेड़, पुष्पों से सजे गुलमोहर के वृक्ष और अन्य स्वदेशी पेड़। सैंट्रल ग्रीन, परिसर की प्रत्येक ऐतिहासिक और नवीन इमारत को परस्पर अपना परिचय देते हैं।

सैंट्रल ग्रीन पर यदि जाएं तो वह नई संरचना को उदघाटित करता है, जिनमें से प्रत्येक इमारत वास्तुकला की समन्वित भाषा बोलती है जो पत्थर की स्क्रीन, बड़ी पत्थर की दीवारों और छतरियों से बना है। मंडप के मुख्य द्वार से सैंट्रल ग्रीन ऐतिहासिक प्रतिबिम्ब वाले तालाब और रूज़वेल्ट हाऊस तक जाता है, जो नए सपोर्ट एनेंक्स और सेवा मंडपों द्वारा संशोधित किया गया है। सैंट्रल ग्रीन के भीतर घुमावदार पत्थरीले रास्ते अप्रत्यक्ष रूप से प्रत्येक इमारत को उद्घाटित करते हैं। ऐतिहासिक चांसरी एक नई रोशनी में दिखाई देती है, जिसे बीच में से नहीं किनारे से सदृश बनाया गया है।

नई इमारत का स्क्रीन वाला अग्रभाग पत्थरीले रास्ते के संबंध में ऐसा दिखता है जैसे उद्यान की परतों की जाली है; यह स्क्रीन बाहरी क्षेत्र को सुव्यवस्थित करती है। यह भूदृश्य इस स्थान को एक लम्बा आयाम देता है, जो दफ्तर के रास्ते को निचले उद्यानों से प्रदीप्त करता है। सैंट्रल ग्रीन की परिधि पर आती मार्गदर्शक परिसंचरण वाली पथरीली दीवारें पूरे परिसर में एक अभिव्यंजक ज्यामिती बनाती है।

आगे चलकर नई चांसरी इमारत ऐतिहासिक चांसरी इमारत के एकदम सामने बनी है, जो नई पुरानी इमारतों में एक संवाद जैसा स्थापित करती दिखाई देती है। नई चांसरी इमारत में तीन मंज़िल हैं जो कार्यालय क्षेत्र और जनता के लिए कांसुलर सेवा प्रदान करती हैं। और आगे चलते हुए नवीन आवासीय इमारतें हैं और दूसरी नई कार्यालय इमारत, सपोर्ट एनेंक्स, जो दूतावास की कार्यक्षमता को व्यापक बनाती हैं। दूतावास के वर्तमान ढाँचे को बनाए रखते हुए परिसर को इक्कीसवीं सदी की आवश्यकताओं से जोड़ना, प्रत्येक नई इमारत को अद्वितीयता प्रदान करता है।

केंद्रीय हरित गलियारा (सेंट्रल ग्रीन कॉरिडोर)

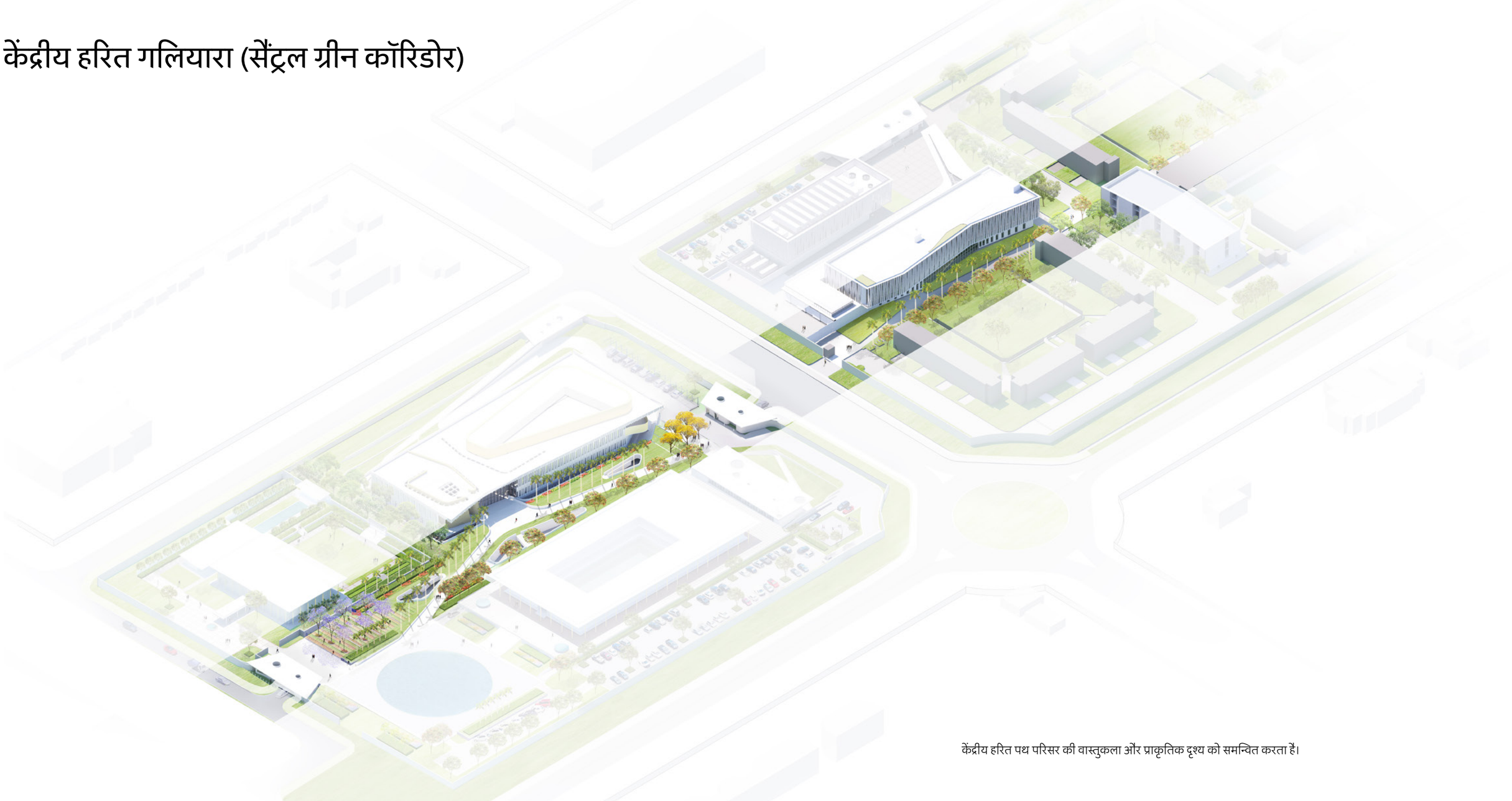

केंद्रीय हरित पथ परिसर की वास्तुकला और प्राकृतिक दृश्य को समन्वित करता हैं।

परावर्ती पूल (रिफ्लेक्टिंग पूल)

परावर्तक पूल के नए डिज़ाइन में पीने योग्य पानी का उपयोग नहीं किया जाता है और पूरे परिसर में पानी के प्रयोग को भी कम करता है। पूल मानसून में एक स्पंज की तरह काम करता है, वर्षा के पानी को सम्भालता है, जो एक मिलियन गैलन पानी को उपचार के लिए स्टोर करता है और निचले ग्रेड के पूल में पुन: प्रयोग में लिया जाता है। भारत की पारंपरिक बावड़ियों की तरह यह पूल भी साल भर काम करेगा, केवल सूखे मौसम में खाली हो जाएगा। वर्तमान पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए और एडवर्ड ड्यूरेल स्टोन के दृष्टिकोण को याद रखते हुए पानी न रहने पर भी पूल का चमकीला तल चांसरी का प्रतिबिम्ब दिखाता रहेगा।

चांसरी इमारत की प्रेरणा ताज महल से मिली थी: परावर्ती पूल, पेड़ों की एवेन्यू, मंच जैसा आधार; संरचना की कोमलता व समृद्धता

दाईं ओर: परावर्ती पूल के नीचे (पानी संग्रह की) टंकी

संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास, नई दिल्ली, भारत

एक एकीकृत स्थायी परिसर

ब्यूरो ऑफ ओवरसीज़ बिल्डिंग्ज़ ऑपरेशंस (ओबीओ) के निदेशक टेड डेविस कहते हैं। "तीव्रता से बढ़ते जलवायु मुद्दों के साथ पारिस्थितिक रूप से लचीले प्रारूप की रणनीतियों को लागू करना अनिवार्य हो गया हैं। पूर्ण परियोजना और नए परिसर की उपयोगिता का डिज़ाइन एक स्थायी दृष्टिकोण को साझा करते हैं जो सिंचाई तथा रखरखाव की आवश्यकताओं को सीमित करते हैं। यह पीने के पानी की मांग को कम करता हैं और वर्षा के पानी और अपशिष्ट जल का पुनर्प्रयोग (रीसाइकिल) करता हैं। इसके अलावा, परिसर में छत पर लगी फोटोवोल्टिक श्रृंखलाओं के साथ वहीं पर (ऑन साइट) नवीकरणीय बिजली उत्पादन शामिल हैं।"

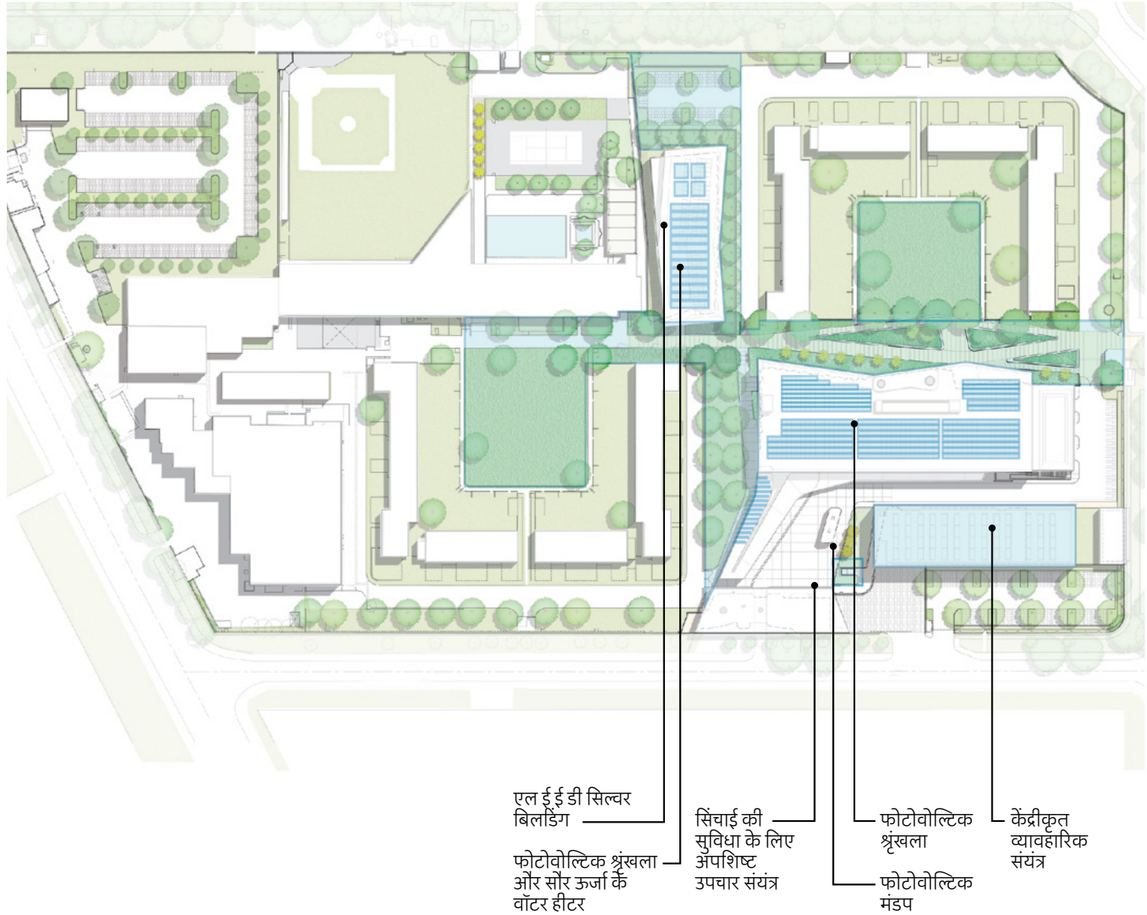

संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास, नई दिल्ली, भारत

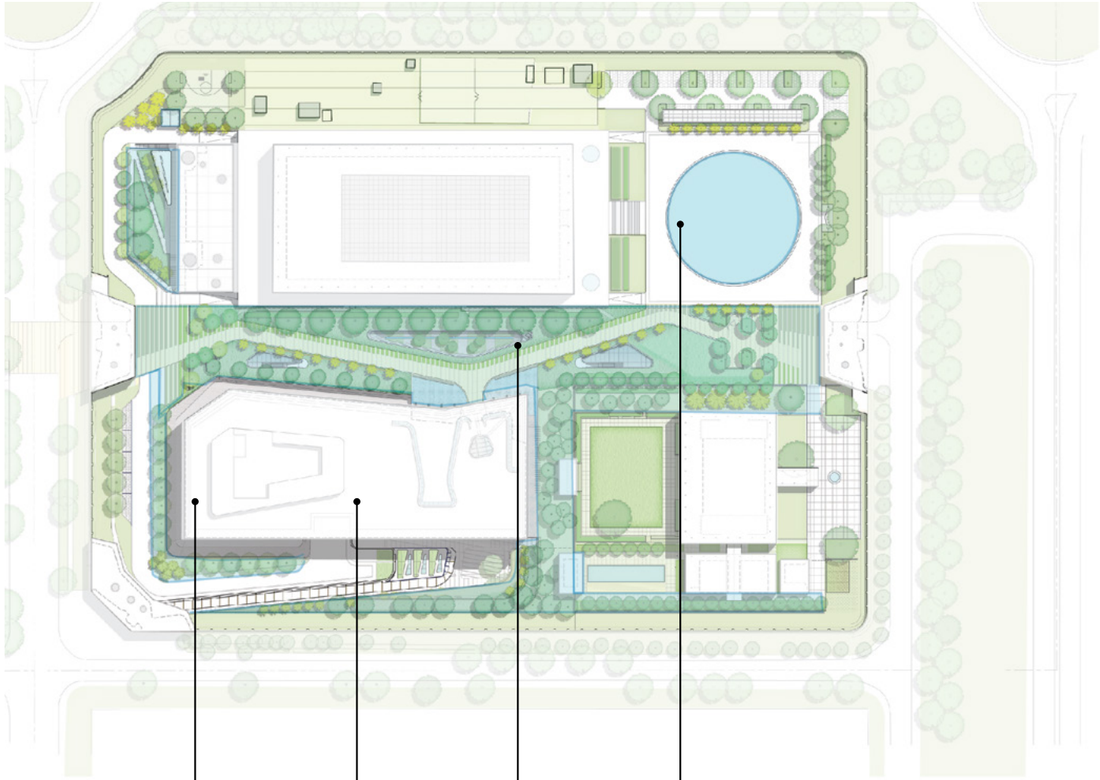

एक कायाकल्पित प्राकृतिक दृश्य

भारतीय वास्तु परम्पराओं में उद्यानों की मुख्य भूमिका हैं। नए दूतावास का दृश्य गुलमोहर के गहरे लाल फूलों, रूएला पौधों के जामनी और हरे पत्तों से संतृप्त ताड़ के पेड़ शीतलता प्रदान करते हैं। पथ के साथ-साथ, पत्थरीले रास्ते और घास का तालमेल कुछ ऐसा हैं कि वह हरियाली और ठोस पदार्थों से बने दृश्य को बहुत ही सुंदर बनाते हैं।

४०० से अधिक नए वृक्ष प्रदूषित हवा को सोख कर साफ करते हैं और प्रदूषक गैसों को कम करते हैं। इमारत के अग्रभाग पर की गई टाइटेनियम कोटिंग भी हवा को प्रदूषित करने वाले कणों को हटाने में सहायता करेगी। सूखा सह सकने योग्य पौधे पानी की खपत को कम करते हैं।

पुनर्जीवित दृश्य भारतीय वनस्पतियों की पूर्ण जीवंतता को दर्शाएगा

संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास, नई दिल्ली, भारत

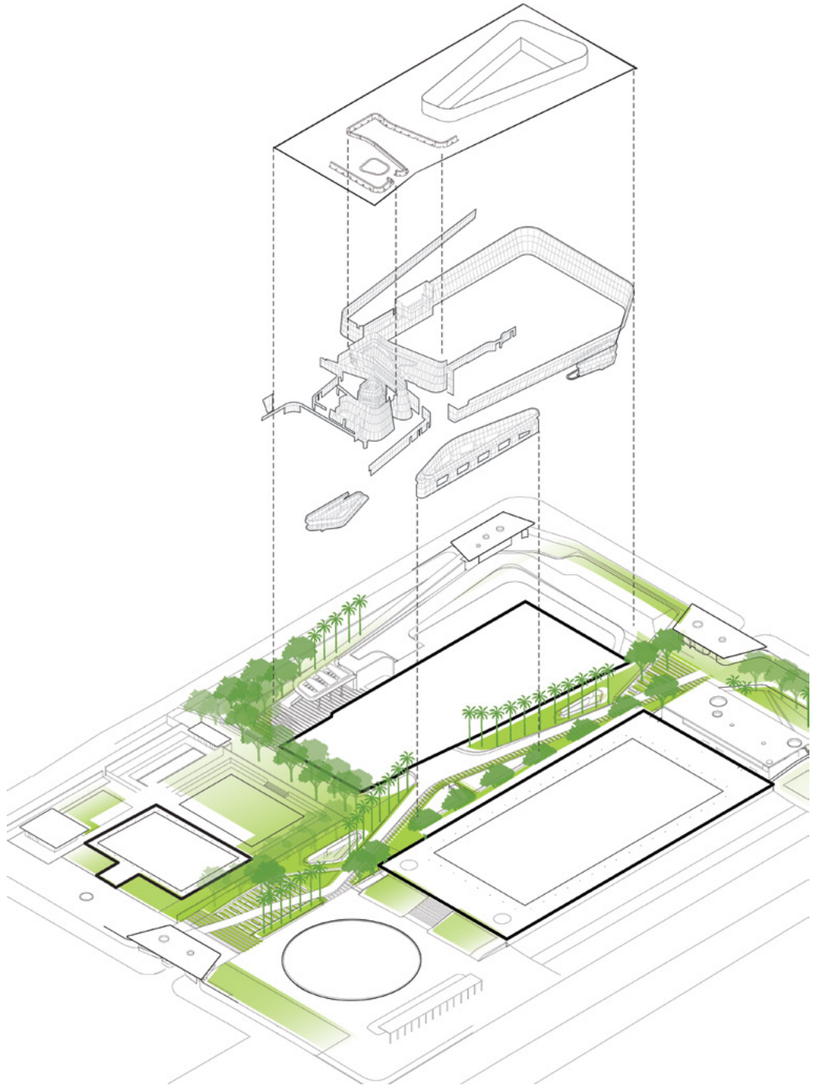

संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास, नई दिल्ली, भारत

पत्थर की दीवारें

दूतावास में कई गतिविधियाँ होती हैं, कुछ जगह समारोह के लिए हैं, जबकि कुछ अन्य उपयोग के लिए हैं। यहाँ पर बनीं दीवारें दूतावास की सुरक्षा की आवश्यकता हैं, यहाँ पर प्रचुर उद्यान शांति और सुरक्षा का अहसास देते हैं। परिधि से आरम्भ होते हुए, आसानी से एक्सेस मंडप तक पहुंचाने वाली घुमावदार दीवारें आरामदायक गति प्रदान करती हैं।

एक बार दूतावास के भीतर आने के बाद उद्यान के रूप में बनीं दीवारें दूतावास के विभिन्न विभागों को परिभाषित करती हैं, यह अनुभव भारतीय किलों फतेहपुर सीकरी और आगरा फोर्ट की याद दिलाता हैं। प्रमुख बिंदुओं पर पत्थर की दीवारों को गोलाकार करना या घुमावदार बनाने से दूतावास परिसर स्वागत करता हुआ सुखद ज्यामिति दर्शाता हैं। पत्थर की दीवारें बाहर से अंदर भी आती हैं जो वास्तु और प्राकृतिक दृश्य को समानता की भाषा में बांधता हैं।

नए दूतावास में बड़ी मात्रा में स्थानीय पत्थरों का उपयोग किया गया हैं जिनमें से मुख्य हैं, कोटा चूना पत्थर (लाइमस्टोन), सुनहरा सागोंन बलुआ पत्थर (गोल्डन टीक सैंडस्टोन) और अम्बाजी सफेद संगमरमर। केंद्रीय हरियाली के साथ-साथ चलने वाला पथ ग्रेनाइट के दो रंगों का मिश्रण हैं जिनका स्रोत भारत में ही हैं। परिसर के एक्सेस मंडपों पर सुनहरा टीक बलुआ पत्थर दीवारों को एक नर्मी प्रदान करता हैं। भारत के उत्पाद का ही इमारत और परिदृश्य में प्रयोग ने पर्यावरण को अत्यधिक प्रभाव से बचाया हैं जो अकसर महाद्वीपों के आर-पार माल के आदान प्रदान में होता हैं। साथ ही इमारत और पथिकों के पथ को स्थानीय संदर्भ से भी जोड़ता हैं।

भारत में पत्थरों को पसंद किया जा रहा हैं

आगमन पथ और नई चांसरी इमारत

नई इमारत के प्रांगण में एक छिछले पूल द्वारा दूतावास परिसर में पानी के प्रयोग से एक शांतिपूर्ण परावर्तक स्थान की छवि बनाई गई हैं। तालाब के उस पार प्रवेश की ओर पुल पर चलते समय छतरियां और वाष्पित जल ठंडक प्रदान करते हैं। आगमन प्लाज़ा का स्थान मंच पर होने के बजाय सकारण भूमि तल पर हैं जो मुख्य द्वार तक अत्यधिक सुगम्यता से पहुंचाता हैं।

घुमावदार पत्थर के बने ड्रम इमारत के प्रवेश की भूमिका तैयार करते हैं। हालांकि ड्रमों में आगरा किले जैसे भारतीय किलेबंदी का उल्लेख लगता हैं, जो पारंपरिक रूप से रक्षात्मक रूप से पत्थर के अग्रभाग को प्रस्तुत करता हैं, नया चांसरी एक विशाल कांच के मुखौटे के साथ खुलेपन की भावना पैदा करता हैं।

छतरियों (कैनोपियों) की एक श्रृंखला दूतावास के इतिहास और भारतीय संदर्भ में नवीन समयोजन दर्शाती हैं। छत की गहराई प्रवेश द्वार पर एक प्रभावशाली छतरी बनाती हैं जो उस पार की ऐतिहासिक चांसरी से मेल खाती हैं। अन्य बहुत सारी छतरियाँ, जैसे शेड वाली जाली रूज़वेल्ट हाऊस के उद्यान के साथ, प्रवेश मंडप पे बनीं छतरी नुमा छत, मिलने के स्थान को सूचित करती हैं और बाहरी स्थान की कार्यक्षमता को भी बढ़ाती हैं। ये छतरियाँ (कैनोपी) प्रकाश और छांव के प्रतिमान बनाती हैं। यह धूप-छाँव का खेल दिल्ली के तेज़ सूरज (सब ट्रॉपिकल सन) की तीव्रता को कम करते हुए भूमि को सजीव कर देती हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास, नई दिल्ली, भारत

नई चांसरी इमारत की लॉबी और गलियारा

लॉबी से गलियारे में प्रवेश करते हैं- जो इमारत का केंद्रीय परिसंचरण स्थान हैं। यह आगंतुकों के लिए मिलने-जुलने का स्थान हैं, गलियारे में भारतीय कलाकारों की कला प्रतिष्ठापित हैं और यहाँ एक कैफे भी हैं। आउटडोर प्लाजा के समान स्तर पर स्थापित, पत्थर से बनी गैलरी इमारत में प्रकाश और परिदृश्य का स्वागत करती हैं। गलियारा स्मारकीय पत्थर की घुमावदार सीढ़ियों के साथ राजदूत कार्यालय की ओर आगे बढ़ता हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास, नई दिल्ली, भारत

नई चांसरी इमारत

अमेरिकन कलाकार स्पेनसर फिंच ने स्काइलाइट के नीचे ग्लास (कांच) इंस्टॉलेशन की हैं जिससे विभिन्न रंगों की छाया होती हैं, यह दूतावास को समकालीन कला की भाषा से जोड़ता हैं।

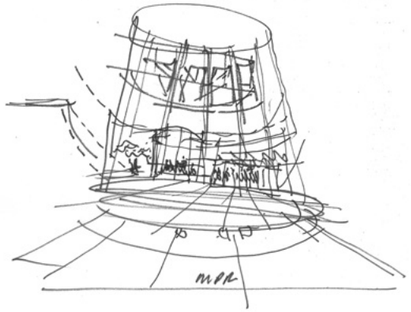

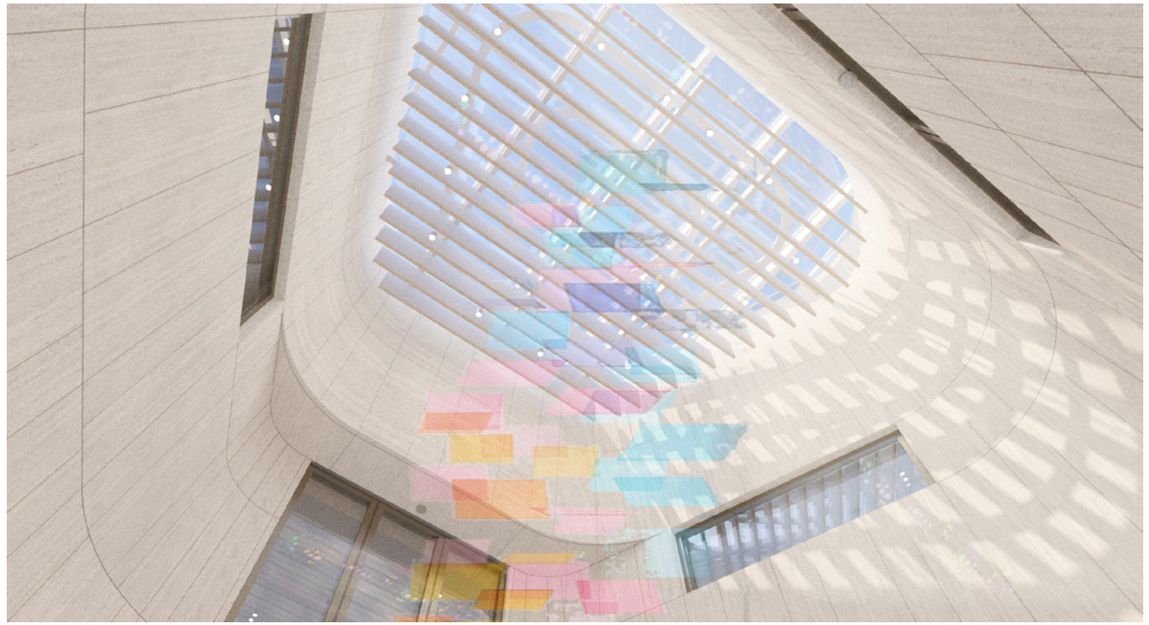

संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास, नई दिल्ली, भारत

नई चांसरी इमारत की कांसुलर सेवायें

सार्वजनिक क्षेत्र के अंर्तगत, भारतीय समकालीन कलाकार भारती खेर की पत्थर से जड़ी कलाकृति स्थान को एक अपनापन प्रदान करती हैं। वाइस/मैंनफ्रेडी ने खेर के साथ काम किया हैं और ऐसे भारतीय पत्थरों का चुनाव किया हैं जो डिज़ाइन के साथ मेल खाते हैं।

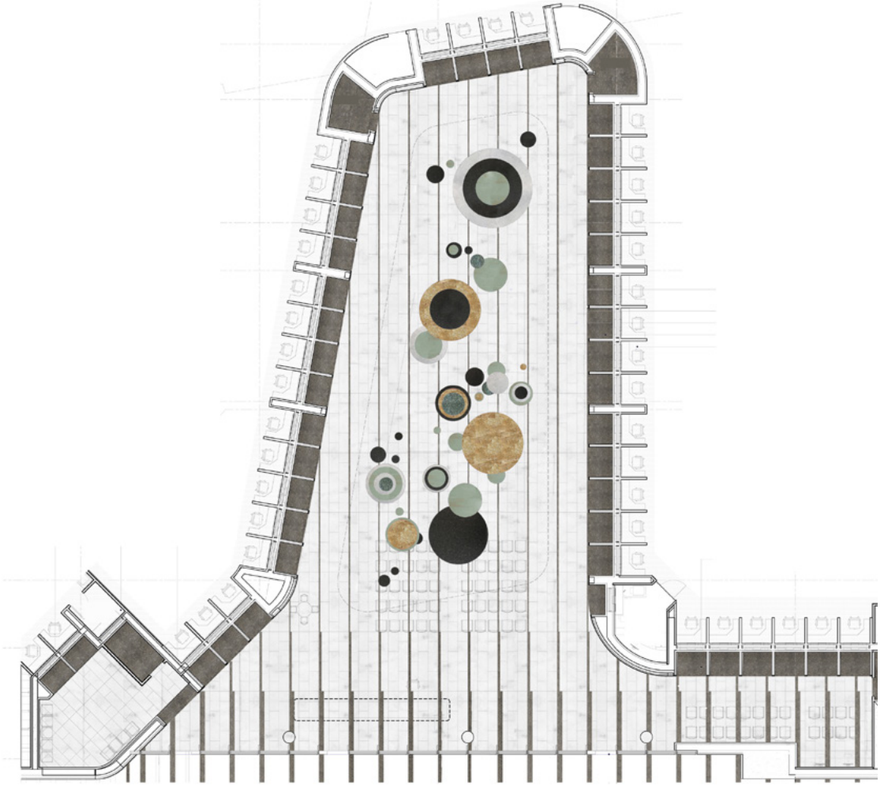

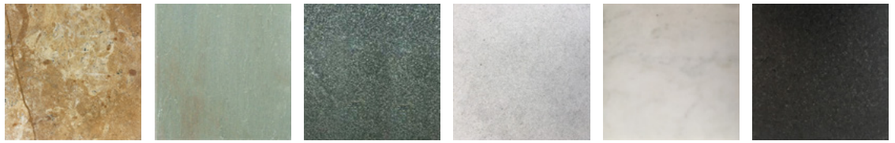

संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास, नई दिल्ली, भारत

नई चांसरी इमारत के कांसुलर उद्यान

नई चांसरी के दक्षिण की ओर, एक अवरोही छायांकित पथ हैं जो कांसुलर सेवाओं के सामने एक सीढ़ीदार उद्यान की ओर जाता हैं। आगंतुक परिसर के कोने से कांसुलर मंडप के द्वारा प्रवेश करते हैं। आशा हैं कि नवीन छायादार बाहरी प्रतीक्षा स्थल अब भारी मात्रा में आने वाले आगंतुकों को समायोजित कर लेगा। प्लाज़ा के किनारे बने सीढ़ीदार उद्यान में ताड़ के पेड़ हैं, छायादार वृक्ष हैं, सूखा सहने वाले पौधों की पंक्तियां और चमकीले फूलों के पौधे हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास, नई दिल्ली, भारत

जालीदार दीवार (स्क्रीन)

नई चांसरी और सपोर्ट एनेक्स की जालीदार दीवारें (स्क्रीन वॉल) जो के नक़्क़ाशीदार छिद्रित पत्थर से बनी ऐतिहासिक जाली से प्रेरित, जालीदार पर्दे जैसी बनाई गई हैं जिससे नई दिल्ली के तपते सूरज से बचा जा सके। ये जाली पहले से ढाली गई (प्रीकास्ट) फिन श्रृंखला से बनी हैं जो ब्राइज़ सोलेल (सूरज अवरोधक) का काम करते हैं और आंतरिक भाग को छाया प्रदान करते हैं। जालीदार परदे की तरह यह आवरण (क्लेडिंग) निजता की जरूरत और दिन के प्रकाश को संतुलित करती हैं। जाली के माध्यम से छनकर आता हुआ अप्रत्यक्ष प्रकाश कार्य करने के वातावरण के अनुकूल हैं। प्रत्येक फिन स्लोप में अनेक परतें हैं। फिनस की अल्ट्रेशन जब एकसाथ एकत्रित होती हैं तो अग्रभाग में झूलते हुए बुनावटी पैटर्न की रचना करता हैं।

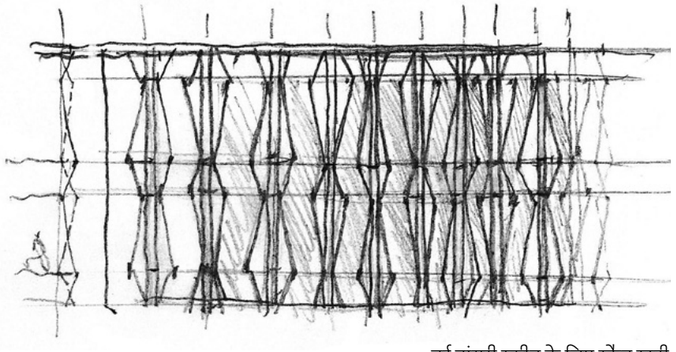

नई चांसरी स्क्रीन के लिए स्केच स्टडी

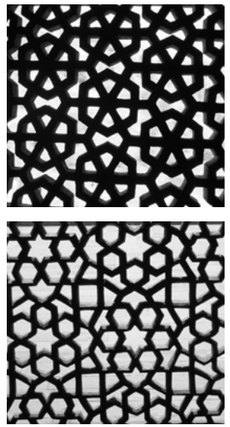

जालीदार दीवार

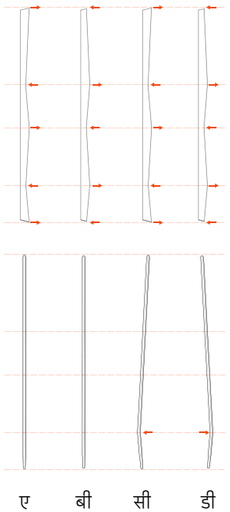

चार अनूठे प्रीकास्ट तत्व

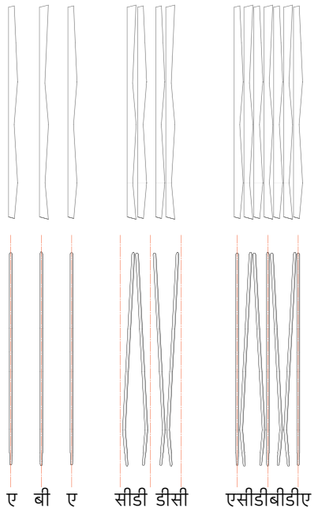

दोहराये हुए तत्वों का पैटर्न

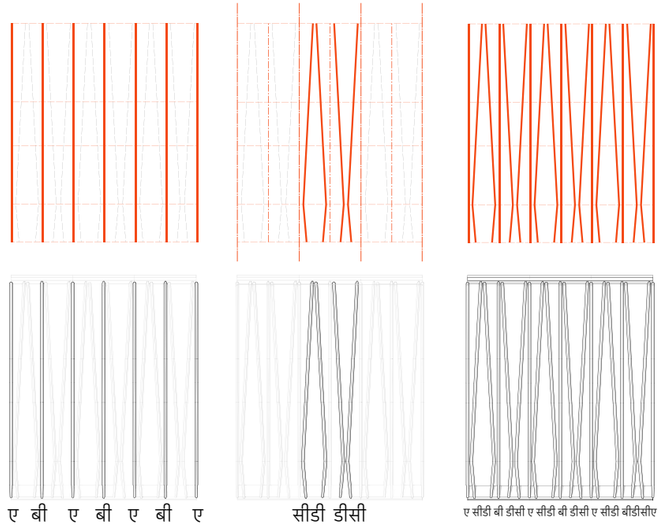

अग्रभाग जैसा पैटर्न

संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास, नई दिल्ली, भारत

सपोर्ट एनेंक्स

पत्थर की जालियों और आवरण लॉबी के साथ सपोर्ट एनेंक्स नवीन चांसरी की वास्तु भाषा का विस्तार करती हैं। नई चांसरी की भांति ही सपोर्ट एनेंक्स भी प्रीकास्ट स्क्रीन से बना हैं जिसमें पत्थर से सजी हुई लॉबी हैं। सपोर्ट एनेंक्स नए परिसर के चरणबद्ध निर्माण अवधि में विभिन्न गतिविधियों की सुविधा प्रदान करेगा। पहले चरण में, भवन में भूतल पर कांसुलर सेवाएं और दूसरे और तीसरे तल पर दूतावास कार्यालय होगा। दूसरे और तीसरे चरण में, सपोर्ट एनेंक्स कई कार्यों के लिए हैं, जिसमें इमारत का आधा उत्तरी भाग कर्मचारियो / कम्युनिटी के लिए और दक्षिणी हिस्से में विभिन्न दूतावास सेवाएं प्रदान की जायेगी।

संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास, नई दिल्ली, भारत

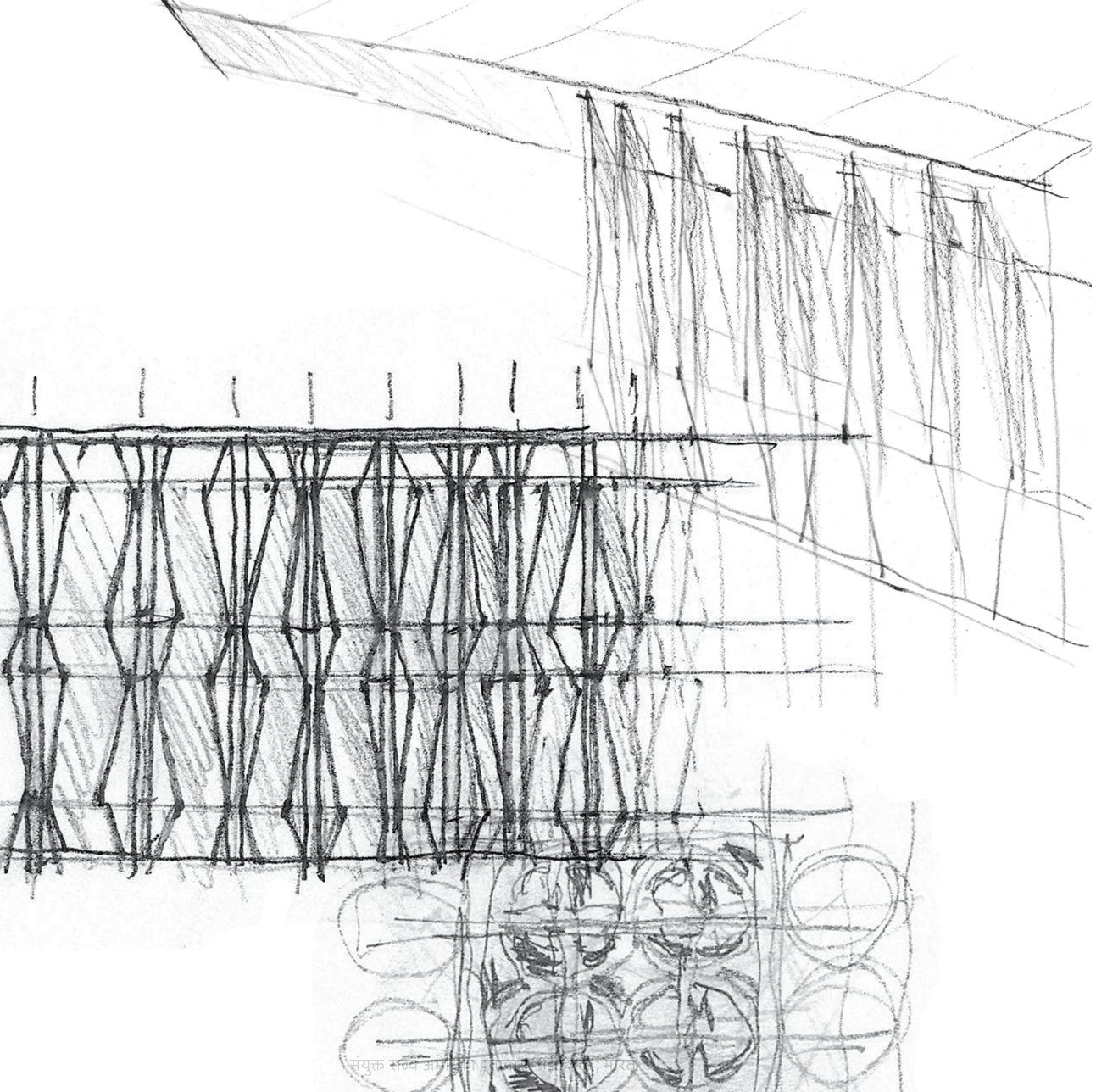

राजनयिक गतिविधिओं का परिसर

नई दिल्ली स्थित संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास का नया डिज़ाइन वास्तु और प्राकृतिक दृश्य, ऐतिहासिक दूतावास परिसर की कल्पनाओं को प्रस्तुत करता हैं, जो बढ़ती राजनयिक आवश्यकताओं को पूरा करता हैं। सही मायनों में दूतावास एक इमारत ही नहीं हैं, अपितु लोगों का समूह हैं और समय के साथ प्रतिनिधिमंडल के घटक और आवश्यकताएं बदल जाती हैं। राजदूत सेवानिवृत होते हैं या उन्हें पुनः नियुक्त किया जाता हैं, नई एजेंसियों को पोस्ट में जोड़ा या हटाया जाता हैं। राजनयिक स्वदेश लौटते हैं और राजनीतिक प्रशासन बदलते हैं। हालांकि संयुक्त राज्य अमेरिका के भारत के साथ अपने संबंधों की प्रतिबद्धता दूतावास के मूल निर्माण के बाद से निरंतर बनी हुई हैं, मिशन और प्रतिनिधिमंडल विकसित हुए हैं।

जालीदार, स्टोन वॉल और कैंनोपी प्रकृति के संबंध में लौकिक और क्षणिक प्रभाव डालते हैं। प्रकाश और छाया, छतरियों (केनोपी) के नीचे से छन कर आती हैं और एक सुंदर चितकबरा सा प्रभाव डालती हैं। भूमि से जोड़ने की विशेषता रखता पत्थर, मकराना संगमरमर से मिला हुआ उद्यान की दीवारों में स्पर्शनीय अद्वितीयता के पल उजागर करता हैं। दूतावास का परिसर नई दिल्ली के गतिमान मौसम जिसमें मानसून और सूरज प्रचण्ड होता हैं, उसकी भी पुन: प्रतिष्ठित फव्वारे और सौर पेंनलों के द्वारा प्रशंसा करता दिखता हैं।

इमारतों के एक पृथक सेट की बजाय, रूपांतरित परिसर जालीदार पत्थर की दीवारों और कैंनोपियों की भाषा के माध्यम से जुड़ा हुआ हैं। सेंट्रल ग्रीन परिसर को और भी एकरूपता प्रदान करता हैं, जो प्रत्येक इमारत की कोणीय छवि प्रस्तुत करता हैं जैसे कोई शोभायात्रा हो। इन सुनियोजित और सावधानीपूर्वक अभिकल्पित अंतःक्षेपों और परिवर्धनों के माध्यम से, वाइस / मैंनफ्रेडी की पुनरोद्धार योजना नई दिल्ली मे संयुक्त राज्य अमेरिका के दूतावास के वर्तमान और भविष्य के विकास के लिए एक समृद्ध रूपरेखा बनाती हैं।

परियोजना टीम

मालिक
संयुक्त राज्य अमेरिका राज्य विभाग
ब्यूरो ऑफ ओवरसीज़ बिल्डिंग्ज़ ऑपरेशंस (ओबीओ)

एडिसन डी. डेविस, चतुर्थ
निदेशक

हेनरी जारडीन
मुख्य उप निदेशक

ऐंजल ए. डिज़ोन, तृतीय
कार्यक्रम विकास, समन्वय और सहायता के लिए प्रबंध निदेशक

फिलिप बार्थ
निर्माण, सुविधा और सुरक्षा प्रबंधन के लिए प्रबंध निदेशक

रॉबर्ट टी. जीटर, पी.इ.
योजना प्रबंधक

ब्रेंन्डन लिपमेंन
अभिकल्प प्रबंधक / वास्तुकार

जगदीश पथेला
निर्माण प्रशासक

निर्माण ठेकेदार
बी एल हारबर्ट अंतरराष्ट्रीय

अभिकल्पना टीम
वास्तुकार और साइट अभिकल्प
वाइस/मेंनफ्रेडी

मेंरियन वाइस
अभिकल्प सहयोगी (डिज़ाइन पार्टनर)

माइकल मेंनफ्रेडी
अभिकल्प सहयोगी (डिज़ाइन पार्टनर)

पेंट्रिक आर्माकोस्ट
प्रधान (प्रिंसिपल)

अर्मान्डो पेट्रूचेली
प्रधान (प्रिंसिपल)

क्रिस्टियन यूल
वरिष्ठ परियोजना प्रबंधक / वास्तुकार

संयुक्त वास्तुकार
के सी सी टी आर्किटेक्टस

जॉन चेंपमेन
प्रधान (प्रिंसिपल)

स्टीवन व्लाच
प्रधान (प्रिंसिपल)

नई दिल्ली संयुक्त वास्तुकार
कोठारी एण्ड एसोसिएट्स

एम ई पी / एफ पी / आई टी / एल ई ई डी
डबल्यू एस पी यू एस ए

संरचनात्मक / ब्लास्ट इंजिनइयरिंग
थोर्नटन टॉमासेट्टी

सिविल भूवेंज्ञानिक
लेंगन

परिदृश्य वास्तुकार
रोहडसाइड एण्ड हारवेंल

प्रकाश व्यवस्था अभिकल्प
टिलॉटसन डिज़ाइन एसोसिएट्स

तकनीकी सुरक्षा प्रणाली
सिक्योरिटी डिज़ाइन कंसलटेंट्स, एल एल सी

रूफिंग / वॉटरप्रूफिंग
विस, जेनी, एलस्टनर

कोड / जीवन सुरक्षा
कोड कंसलटेंट, इनकॉरपोरेटेड

खाद्य सेवा
डावेला स्टूडियोज़

ध्वनिकी (अकूस्टिक्स) / ऑडियोविज़ुयल
शेन मिलसम एण्ड विल्के

फव्वारा अभिकल्प
सी एम एस कोलाबोरेटिव

स्काइलाइटस
हैंनटिग्स

पत्थर
स्वेनसन स्टोन कंसलटेंट

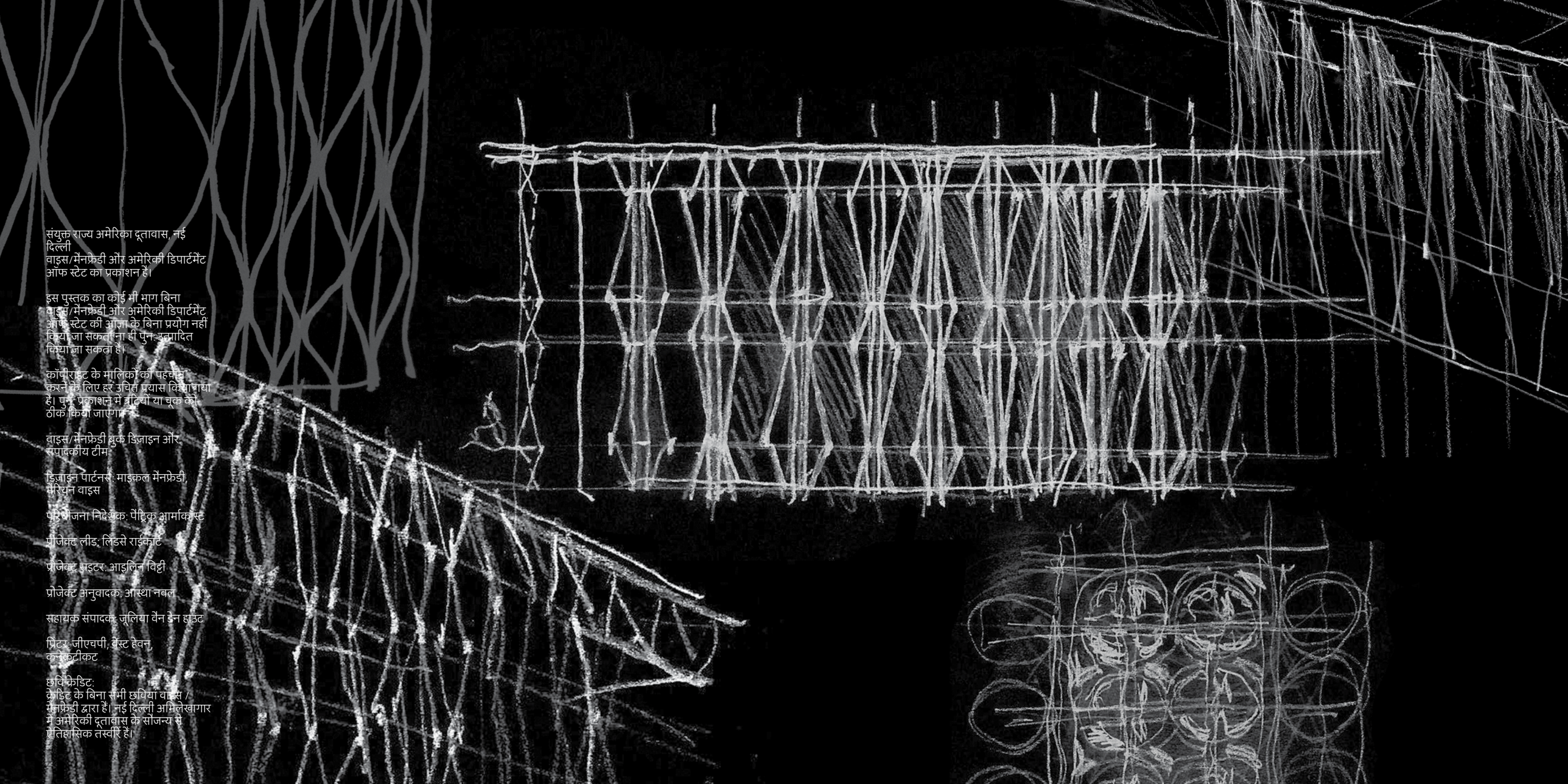

संयुक्त राज्य अमेरिका दूतावास, नई दिल्ली
वाइस/मैनफ्रेडी और अमेरिकी डिपार्टमेंट ऑफ स्टेट का प्रकाशन है।

इस पुस्तक का कोई भी भाग बिना वाइस/मैनफ्रेडी और अमेरिकी डिपार्टमेंट ऑफ स्टेट की आज्ञा के बिना प्रयोग नहीं किया जा सकता ना ही पुन: उत्पादित किया जा सकता है।

कॉपीराइट के मालिकों की पहचान करने के लिए हर उचित प्रयास किया गया है। पुन: प्रकाशन में त्रुटियों या चूक को ठीक किया जाएगा।

वाइस/मैनफ्रेडी बुक डिज़ाइन और संपादकीय टीम

डिज़ाइन पार्टनर: माइकल मैनफ्रेडी, मैरियन वाइस

परियोजना निदेशक: पैट्रिक आर्मार्कोस्ट

प्रोजेक्ट लीड: लिंडसे राईकॉर्ट

प्रोजेक्ट राइटर: आइलिन विट्टी

प्रोजेक्ट अनुवादक: आस्था नवल

सहायक संपादक: जूलिया वैन डेन हाउट

प्रिंटर: जीएचपी, वेस्ट हेवन, कनेक्टीकट

छवि क्रेडिट:
क्रेडिट के बिना सभी छवियां वाइस / मैनफ्रेडी द्वारा हैं। नई दिल्ली अभिलेखागार में अमेरिकी दूतावास के सौजन्य से ऐतिहासिक तस्वीरें हैं।